भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 5 | जुलाई 2004 | अंक 7

अवसरवाद

हमारे देश में आज तक पता नहीं कितने वाद हुए। गाँधीवाद, पूँजीवाद, वंशवाद, सम्प्रदायवाद, छायावाद। इस देश ने सबको पाला-पोसा, बड़ा किया, खड़ा किया। वह अपने में इतना मजबूत हो गया कि देश को ही चलाने लगा। स्थिति यह हो गई कि देश खत्म हो सकता है, उस वाद का खत्म होना मुश्किल है। गाँधीवाद चरखे से चला और संस्थाओं में गबन-घोटाले से लेकर सरकार पर पूर्ण निर्भरता तक पहुँचा। पूँजीवाद तो संसद की लॉबी में नाचने लगा है। वंशवाद केन्द्र से राज्यों तक फैल गया है। नेता के घर में नेता बच्चे जनमने लगे। सम्प्रदायवाद हर भारतवासी के दिल-दिमाग के कोने में गुड़ी-मुड़ी पड़ा रहता था। अब शस्त्र हाथ में ले कूद कर सड़क पर आ गया और क्रोधी भैरव की तरह जो मन में आया करने लगा। कहने का लब्बोलुबाब यह कि आप किसी भी वाद का नाम लीजिए और वह आपको इस देश में हँसता-खेलता, समाज कल्याण से घोर अपराध तक सारे कर्मों में लिप्त एक व्यस्त-सी जिन्दगी जीता मिलेगा।

आप ठीक इस समय समाजवाद की सोच रहे होंगे। उसका नाम क्यों नहीं लिया जा रहा है? उस बहुरुपिए को तो हम गरीबों ने पहले जगह दी, बाप माना, औलाद माना, माशूका माना। हर आकार-प्रकार, रंग, डिजाइन, साइज और मात्रा में स्वीकार किया। यह सब अपने आप में एक मोटी किताब का मामला है। अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारते हुए, किसी भी दिशा में प्रगति कर जाने के मामले में इससे श्रेष्ठ कोई वाद ही नहीं है। लेनिन के समाजवाद से लेकर चन्द्रशेखर (अब मुलायम सिंह) के अम्बानी समाजवाद तक इसके कई रूप हैं। आप इसमें एकता के तत्व खोजें, उसके पूर्व मधु दण्डवते से जनेश्वर मिश्र अलग हो जाते हैं। जिसकी मर्जी हो, स्वयं को, अपनी पार्टी को, गुट को, मण्डली को समाजवादी कह सकता है। यदि डूबना लक्ष्य है, तो उससे ज्यादा भरोसे की कोई चीज नहीं है।

खैर, मैं स्वयं काफी कुछ समाजवादी होने के कारण इसकी ज्यादा बुराई तो नहीं करूँगा। यहाँ मैं यह चाहता हूँ कि जब इस देश ने पूँजीवाद, सम्प्रदायवाद, वंशवाद आदि कितने ही वादों को यथोचित प्रश्रय और बढ़ावा दिया है, तो अवसारवाद ने क्या बिगाड़ा है। एक अवसर तो अवसरवाद को भी दिया जाना चाहिए। 'मत

शेष पृष्ठ 5 पर

इतिहास की बदलती अवधारणाएँ

केन्द्र में नई सरकार स्थापित हो गई। अनेक घटक दलों (संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन) के सहयोग से सरकार गठित हुई जिनमें वामपंथी सदस्यों की मुख्य भूमिका है, न्यूनतम साझा कार्यक्रम में प्रभुत्व उनका होगा किन्तु सत्ता में उनकी सहभागिता नहीं होगी। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन का पहला लक्ष्य है भगवाकरण की समाप्ति यानि एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को विशेषकर इतिहास की पुस्तकों को बदलना। नये इतिहास की स्थापना।

प्रत्येक युग की सत्ता ने देश के इतिहास का लेखन अपने राजनीतिक उद्देश्य के सन्दर्भ में कराया। ब्रिटिश शासन काल में देश के इतिहास को विकृत करने का प्रयास किया गया। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति को महत्वहीन दिखाया गया। अँग्रेजी की शिक्षा द्वारा जीवन शैली बदली गई। साम्प्रदायिकता का बीजारोपण कर देश की राष्ट्रीयता को खण्डित किया गया।

स्वतंत्रता के पश्चात कांग्रेस वामपंथी विचारधारा के शिक्षामंत्री ने इतिहास को नई दिशा प्रदान की। इतिहास में मार्क्सवादी अवधारणा का प्रवेश हुआ। स्वतंत्रता आन्दोलन में कांग्रेस की दूसरे दरजे की सहभागिता दिखाई गई। भारत की शाश्वत संस्कृति और सभ्यता की राजनीतिक व्याख्या की गई। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर विभिन्न धर्मों और उनके गुरुओं को महत्त्वहीन किया गया।

भाजपा सरकार ने विभिन्न राज्यों के शिक्षा मंत्रियों, विभिन्न राजकीय संस्थानों तथा शिक्षाविदों के परामर्श से एन०सी०ई०आर०टी० ने पुस्तकें तैयार कराई जिस पर सितम्बर 2002 में सुप्रीम कोर्ट ने भी सहमति प्रदान की।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार जो वामपंथियों पर आश्रित है, क्या स्नातक कक्षाओं के लिए भारत का राष्ट्रीय इतिहास नहीं तैयार करा सकती जो समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त हो, जिसमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता और जनजीवन का सही स्वरूप प्रगट हो, उस पर राजनीतिक मान्यताओं, विचारधाराओं की छाया न हो। स्नातक कक्षाओं के बाद युवा छात्रों को इतिहास की विभिन्न विरोधी विचारधाराओं और मान्यताओं से परिचित कराया जा सकता है, जिन्हें वे अपनी विवेक बुद्धि से ग्रहण कर सकें।

इतिहास नहीं बदलता, वह वही रहता है, जो है, किन्तु दृष्टि बदलती है। क्या इतिहास को राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं, धारणाओं, विचारधाराओं से मुक्त होकर नहीं देखा जा सकता?

मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह का कहना है—''इतिहास को इतिहास के रूप में लिखिए। आज जो भी लोग हैं उनसे ठीक प्रकार के इतिहास की रचना की उम्मीद नहीं की जा सकती। इतिहास सौ-दो सौ साल पहले की घटना पर आधारित है। इन घटनाओं पर प्रकाश डालने और इन्हें प्रस्तुत करने के भिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं **लेकिन मौलिक रूप से इतिहास को कैसे बदला जा सकता है?''**

उन्होंने आगे कहा—''इस देश की प्रगति में सबका योगदान आवश्यक है। एक ऐसे भारत की कल्पना कीजिए जहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी की शिकायतें उभर कर सामने आती हैं। अब हम इसी में उलझकर रह जाएँगे तो देश का क्या होगा।''

माननीय मंत्रीजी एक ओर इतिहास की मौलिकता की बात कहते हैं दूसरी ओर सभी की शिकायतों की बात कहते हैं। ऐसा इतिहास इतिहास न रहकर कॉकटेल बन जायगा—न वह इतिहास रहेगा, न मिथक। हाँ राजनीतिक इतिहास जरूर बन जायगा, जो प्रत्येक सत्ता परिवर्तन के बाद बदलता रहेगा।

शेष पृष्ठ 3 पर

सम्मान-पुरस्कार

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पुरस्कार

भारत भारती सम्मान (2,51,000)
कमलेश्वर

हिन्दी गौरव सम्मान (3,00,000)
गीतकार नीरज

महात्मा गाँधी सम्मान (2,00,000)
अमरकान्त

दीनदयाल उपाध्याय सम्मान (2,00,000)
सूर्यप्रसाद दीक्षित

अवन्तीबाई सम्मान (2,00,000)
भोजपुरी कवि चन्द्रशेखर मिश्र

साहित्यभूषण (50,000)
बालकृष्ण मिश्र, मुद्रा राक्षस, भारतभूषण, ममता कालिया, डॉ० कुँवर बेचैन, नीलम श्रीवास्तव, प्रो० रामस्वरूप सिंदूर, स्वरूपकुमार बख्शी, प्रो० रमेशकुंतल मेघ, डॉ० संसारचन्द, श्रीकृष्ण मिश्र, माहेश्वर तिवारी, ज्ञानवती सक्सेना।

लोकभूषण सम्मान (50,000)
कैलाश गौतम

कलाभूषण सम्मान (50,000)
डॉ० योगेश प्रवीन

विद्याभूषण सम्मान (50,000)
डॉ० युगेश्वर (वाराणसी)

विज्ञान भूषण सम्मान (50,000)
डॉ० वेदप्रताप वैदिक

प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान
डॉ० रविप्रकाश सिंह (50,000)

बाल भारती सम्मान (25,000)
जयप्रकाश भारती

हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान (25,000)
राजनारायण बिसरिया, डॉ० सुरेश ऋतुपर्व

विश्वविद्यालय स्तरीय सम्मान
डॉ० हरिमोहन, डॉ० सत्यदेव (25,000)

पुस्तकों पर आधारित 20-20 हजार के 34 पुरस्कार पाने वालों में इब्बार रब्बी, रणविजय सिंह, डॉ० शान्तिदेव बाला, अयोध्याप्रसाद गुप्त कुमुद, नवनीत मिश्र, अशोककुमार पाण्डे अशोक, विशिरकुमार पाण्डे, रमेशचन्द्र शुक्ल, अमरबहादुर सिंह, अमरज्योति सिंह, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, जोगेन्द्र सिंह, बैजनाथप्रसाद शुक्ल भव्य, राजकुमारी रश्मि, अजयशंकर पाण्डे, डॉ० कैलाशदेवी सिंह, अरविन्द तिवारी, अरविन्द प्रबोध मिश्र, प्रो० हरिमोहन, सावित्री अरोड़ा, डॉ० ऊषा चौधरी, डॉ० विशम्भरदयाल अवस्थी, डॉ० सुरेन्द्र कौर वार्ष्णेय, राजीव राय, रामशंकर अवस्थी, नन्दकुमार मनोचा, डॉ० रामनारायण शर्मा, कैलाश गौतम, डॉ० परमानन्द जड़िया, सत्यधर शुक्ल व नरेशचन्द्र सक्सेना सैनिक को दिये गये। **सौहार्द सम्मान** के लिए **तमिल** में डॉ० इन्द्रराज बैद, **पंजाबी** में प्रो० यश गुलाटी, **बांग्ला** में डॉ० अनुराधा बनर्जी, **असमिया** में डॉ० देवेनचन्द्रदास, **उर्दू** में इफ्तिखार अहमद खाँ राना, **मलयालम** में वेणुगोपाल कृष्ण, **मैथिली** में मार्कण्डे **प्रवासी व हिन्दी समन्वय** में महेन्द्रप्रताप सिंह को चुना गया है। युवा रचनाकार जाकिर अली रजनीश को पुस्तकों पर आधारित आठ-आठ हजार के 27 पुरस्कारों में युवा लेखन व बाल साहित्य के लिए दो पुरस्कार मिले हैं।

अन्य पुरस्कार सुरेन्द्र पाण्डे, विष्णु विराट, ईश्वरचन्द्र त्रिपाठी, डॉ० जयजयराम अरुणपाल, डॉ० अनंतराम मिश्र, माताप्रसाद, झनकारनाथ शुक्ल, डॉ० मुहम्मद हनीफ शास्त्री, डॉ० वी०के० तिवारी, जगवीर सिंह, सूर्यपाल शुक्ल, डॉ० सुभद्रा खुराना, डॉ० वेदप्रकाश गर्ग, डॉ० ए०एन० अग्निहोत्री, साधुशरण वर्मा, नरेन्द्र पाण्डेय, रश्मिकुमार, सोती वीरेन्द्रचन्द्र, डॉ० आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप, डॉ० नत्थन सिंह, रचना शुक्ला, आर०के० पालीवाल व प्रभुनारायण श्रीवास्तव के साथ सावित्री अरोड़ा व प्रो० हरिमोहन को मिले हैं।

विजयदान व हिमांशु जोशी को ज्ञानपीठ फेलोशिप

भारतीय ज्ञानपीठ ने विजयदान देथा और हिमांशु जोशी को डेढ़-डेढ़ लाख रुपये की फेलोशिप दी है। फेलोशिप की अवधि एक साल की है। शोधपरक लेखन के लिए प्रख्यात कथाकार एवं लोकसाहित्य के स्तम्भ विजयदान देथा फेलोशिप के तहत राजस्थानी लोक प्रेमाख्यानों पर दो भाग में एक अन्वेषणात्मक ग्रन्थ लिखेंगे। सृजनात्मक लेखन की फेलोशिप प्रसिद्ध कथाकार हिमांशु जोशी को प्रदान की गयी है। वे इसके अन्तर्गत तिब्बत के अनछुये प्रसंगों पर एक उपन्यास लिखेंगे।

भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार

प्रेमरंजन अनिमेश के कविता संग्रह 'इक्कीसवीं सदी की सुबह : झाड़ू देती स्त्री' पर।

भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार

शशिभूषण द्विवेदी : ब्रह्महत्व तथा अन्य कहानियाँ, रंजुला शाह : परछाईं की खिड़की से (कहानी संग्रह), प्रत्येक को ग्यारह हजार रुपये।

राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान-2004

डॉ० देशबन्धु शाहजहाँपुरी (शाहजहाँपुर) के कथा-संग्रह 'अद्‌भुत होली' को तथा काव्य साहित्य में डॉ० अजय जनमेजय (बिजनौर) के काव्य-संग्रह 'हरा समुन्दर गोपी चन्दर' को चयनित किया गया।

इन बाल साहित्यकारों में से प्रत्येक को दस हजार रुपये की राशि, अक्टूबर मास में आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा।

राष्ट्रधर्म कहानी प्रतियोगिता

'राष्ट्रधर्म' मासिक पत्रिका द्वारा आयोजित श्री राधेश्याम चितलांगिया स्मृति अखिल भारतीय हिन्दी कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार (रु० पाँच हजार) राँची के श्री वासुदेव को, द्वितीय पुरस्कार (रु० तीन हजार) डॉ० रमाकान्त शर्मा, मुम्बई तथा तृतीय पुरस्कार (रु० दो हजार) डॉ० अंजना मुवेल, झाबुआ (म०प्र०) को दिया गया। इसके अतिरिक्त तीन सांत्वना पुरस्कार (रु० एक हजार प्रत्येक) के लिए सर्वश्री डॉ० शालिग्राम शुक्ल 'नीर', आजमगढ़ (उ०प्र०), कु० दीपाली शुक्ल, भोपाल (म०प्र०) एवं श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, हैदराबाद (आ०प्र०) को चयनित किया गया।

सहारा समय कथा पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार (31 हजार रुपये)
जानकी पुल : प्रभात रंजन

द्वितीय पुरस्कार (21 हजार रुपये)
कुम्हड़े की माँ : ऋत्विकदास मिश्र

तृतीय पुरस्कार (11 हजार रुपये)
शिल्पहीन : शशिभूषण द्विवेदी

प्रोत्साहन पुरस्कार (2 हजार एक सौ रुपये प्रत्येक)
उसका सच : सीमा स्वधा, एक अवांतर कथा के बहाने : मनीष द्विवेदी, बड़ी हो रही थी : चमेली जुगरान, सौदामिनी : चंद्रमोहिनी श्रीवास्तव, चपड़ासन : रतनकुमार सांभरिया, स्वीट होम : जसविंदन शर्मा, अंत्योदय : सरोज नेगी, एक अधूरी पटकथा : मनोज कौशिक, हे राम : जाकिरअली रजनीश, मछली : रामेश्वर गोदारा ग्रामीण।

डॉ० रामचन्द्र तिवारी का 81वाँ जन्मदिन

गोरखपुर विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य तथा विभागाध्यक्ष डॉ० रामचन्द्र तिवारी को उनके 81वें जन्मदिन पर गोरखपुर विश्वविद्यालय में 4 जून 2004 को सम्मानित किया गया। समारोह के अध्यक्ष कुलपति डॉ० रेवतीरमण पाण्डेय ने कहा—आचार्य रामचन्द्र तिवारी के सम्मान से गुरु परम्परा गौरवान्वित हुई है। डॉ० तिवारी ने हमेशा ऋषि परम्परा को बढ़ावा दिया है और सहजता का विस्तार किया है। सहजता की स्थिति ही स्थिति प्रज्ञ होती है, आचार्य तिवारी उस स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं।

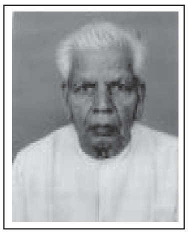

सम्मान से अभिभूत आचार्य तिवारी ने कहा—आपने जो स्नेह दिया है, उससे शक्ति प्राप्त कर जीवन में कर्मठता के क्षेत्र में आगे बढ़ूँगा। ऐसा कुछ नहीं करूँगा जिससे मेरे नाम के साथ जुड़ने पर कोई किसी जगह किसी रूप में ग्लानि का अनुभव करे। मित्रों से चाहूँगा कि असहमति हो, मतभेद हो, विचारधारा का भेद हो लेकिन सद्भाव का भाव परस्पर बना रहना चाहिए।

समारोह का आयोजन उनके पूर्व शिष्यों तथा सहयोगियों ने किया। समारोह में डॉ० रामदेव शुक्ल, डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव, डॉ० गिरीश रस्तोगी, प्रो० एम०एल० श्रीवास्तव, प्रो० सभाजीत मिश्र, डॉ० अमरनाथ (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय) आदि उपस्थित थे। समारोह के आयोजक डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय ने घोषणा की कि आचार्य तिवारी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर एक ग्रन्थ का प्रकाशन इसी वर्ष किया जायगा।

युवा काव्य संध्या एवं नवोदित लेखक पुरस्कार

युवा काव्य संध्या एवं नवोदित लेखक पुरस्कार 2003-4 कार्यक्रम हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष, श्री जनार्दन द्विवेदी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। नवोदित लेखक पुरस्कार वितरण में 37 नवोदित लेखकों को पुरस्कृत किया।

पुरस्कारस्वरूप क्रमश: प्रथम पुरस्कार 3,100 रुपये, द्वितीय 2,500 रुपये, तृतीय 2,000 रुपये तथा प्रोत्साहन पुरस्कार 1,100 रुपये की धनराशि के साथ प्रतीक चिह्न, प्रमाण भेंट किए गए।

पाठ्यक्रम में साहित्य के नाम पर, इतिहास के नाम पर और राजनीति के दर्शन की बतौर क्या पढ़ाया जाए, यह फैसले आज हमारे यहाँ प्राय: कलाकार तथा शिक्षाविद् नहीं, नेता और बाबू ले रहे हैं। इस कला से एक स्वायत्त रचनाकर्म की नहीं, समाज सुधार का परचम या स्कूली विद्यार्थियों के काम की आदर्शवादी चीज बनने की अपेक्षा की जाने लगी है। यह बात किसी एक पार्टी विशेष के ही सन्दर्भ में सही नहीं, लगभग हर पार्टी के सन्दर्भ में खौफनाक ढंग से लागू होती है।

दिल्ली में इन दिनों राज्य सत्ता में फेरबदल के बाद से दुनियादार राज्याश्री साहित्यकारों के प्रतिस्पर्धी खेमों में पुन: भारी हलचल दिखने लगी है। 'समाज के प्रति जिम्मेदार साहित्य', 'जनोन्मुखी साहित्य' (क्या सत्साहित्य कभी गैरजिम्मेदार या जनविमुख हो सकता है?) जैसे वाक्य गोदामों से निकालकर उसी तरह बाहर लहराये जाने लगे हैं, जैसे कि पिछली बार निजाम बदलने पर 'देशभक्ति', 'मातृभूमि वत्सलता' और 'सनातन हिन्दू परम्परा' के वाक्य दिल्ली दरबार में भुनाने के लिए बाहर निकाल लिये गये थे। **—मृणाल पाण्डे**

साहित्यकार एवं न्यायविद् नारायणदास का निधन

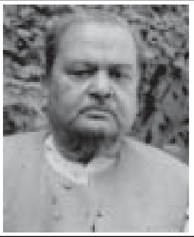

स्वर्गीय रत्नाकरजी के पौत्र नारायणदास का 2 जून, 2004 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। कुछ दिन पूर्व उन्होंने एंजियोग्राफी करायी थी, चिकित्सकों ने बाईपास कराने का परामर्श दिया था। वे 72 वर्ष के थे। साहित्यिक अभिरुचि उन्हें विरासत में मिली थी। अरबी, फारसी, उर्दू, बंगला, हिन्दी एवं संस्कृत का उन्हें सम्यक् ज्ञान था। 1997 में अब्दुर्रहीम खानखाना की 'खेद कौतुकम' के अशुद्ध पाठ को शुद्ध कर प्रकाशित किया। मात्रिक छन्दों पर 'हिन्दी छंदोलक्षण' उनकी पुस्तक प्रकाशित है। 'हिन्दी में विभक्ति विचार' प्रकाशनाधीन है। उनकी 19वीं शताब्दी के काशिका बोली के सशक्त कवि तेग़ अली की ग़ज़ल पुस्तक 'बदमाश दर्पण' विस्तृत भूमिका तथा टीका सहित विश्वविद्यालय प्रकाशन से प्रकाशित है। उन्होंने साहित्यिक तथा न्यायिक विषयों पर अनेक निबन्ध लिखे हैं। 1961 में उन्होंने न्यायिक सेवा में प्रवेश किया। उत्तर प्रदेश सरकार के विधि सचिव एवं विधि परामर्शी रहे।

नारायणदासजी मेरे अभिन्न मित्र थे। शरीर से असमर्थ होने के कारण वे मेरे यहाँ नहीं आ पाते थे। उनका फोन आता था, भाई रविवार को तो आओ। इधर डेढ़ मास से उनका फोन नहीं आया। अचानक 2 जून 2004 को प्रात: 8 बजे उनका फोन आया। मैंने कहा इतने दिनों बाद कैसे याद किया। ज्ञात हुआ कि वे चिकित्सा के लिए लखनऊ गये थे। वहाँ से आने के बाद भी चिकित्सा चलती रही। उन्होंने कहा अब इस स्थिति में हूँ कि कुछ पढ़-लिख सकूँ। कुछ पुस्तकें भेजें। लक्ष्मीधर मालवीय की 'लाई हयात आए' पढ़ना चाहता हूँ।

मैंने उसी दिन शाम को 7 बजे उन्हें पुस्तकें भेज दीं जिसे उन्होंने अपने हस्ताक्षर और तिथि से प्राप्त की। दूसरे दिन उनका फोन न आने से शाम 4 बजे फोन किया तो उत्तर मिला 'वे चले गये।' 'कहाँ गये?' 'चले गये।' मैं स्तब्ध रह गया। तब मुझे बोध हुआ वे सशरीर सदा के लिये चले गये। उसी दिन रात 11.30 पर उनका निधन हो गया। उनसे वादा किया था कि रविवार, 6 जून को आपके निवास पर आऊँगा। वादे के अनुसार गया किन्तु शोक व्यक्त करने। जीवन-मृत्यु का ऐसा है खेल। उनके निधन से हिन्दी साहित्य की अपूरणीय क्षति तो हुई ही, मेरे अभिन्न मित्र जिनके साथ बैठ कर साहित्य-संवेदना-सुख की अनुभूति होती थी वे चले गये। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

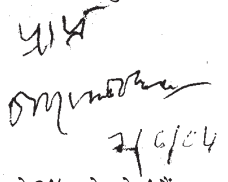

प्रख्यात साहित्यकार उदयराज सिंह का निधन

कथा-सम्राट राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह के सुपुत्र तथा प्रख्यात साहित्यकार उदयराज सिंह का सोमवार, 21 जून, 2004 को पटना में निधन हो गया। उदयराजजी साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' के सम्पादक और अनेक गद्य-ग्रन्थों के रचनाकार थे।

स्वर्गीय उदयराजजी को साहित्यिक साधना विरासत में मिली थी। उन्होंने अपने पितामह राजा राज राजेश्वरीप्रसाद सिंह की साहित्यिक विरासत को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने सम्पादकत्व में 1950 में 'नई धारा' साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन किया, जो आज भी अनवरत प्रकाशित हो रही है। गद्य-लेखन एवं पत्रिका-प्रकाश के माध्यम से उन्होंने साहित्य की नयी धारा की तलाश की। वर्ष 2002 में बिहार सरकार के राजभाषा विभाग से उन्हें साहित्य साधना और सर्जनात्मक लेखन के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान के लिए सर्वोच्च 'राजेन्द्रप्रसाद शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया।

धर्म निरपेक्षता बनाम क्षेत्रीयता, जातीयता

आज देश में राष्ट्रीयता का बोध समाप्त होता जा रहा है, क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता और जातीयता प्रधान होती जा रही है।

हम अपने राष्ट्रीय नेताओं, महापुरुषों से छात्रों को परिचित नहीं करा सके। किन्तु अब प्रत्येक प्रदेश अपने क्षेत्र के नेताओं की जीवनी अपनी पाठ्य-पुस्तकों में सम्मिलित करेंगे। यह पहले ही किया जाना चाहिए था। उत्तर प्रदेश में 'भारत के महान व्यक्तित्व' के अन्तर्गत चौधरी चरण सिंह की जीवनी सम्मिलित की जायगी। कक्षा 5 में 'एकलव्य' की गुरुभक्ति के बारे में पढ़ाया जायगा। एकलव्य गुरुकुल के आसपास रहकर द्रोणाचार्य द्वारा पाण्डवों को दी जाने वाली शिक्षा को ध्यानपूर्वक सीखता रहा। हरियाणा में कक्षा 5 की पुस्तकों में सर छोटूराम की जीवनी सम्मिलित की जायगी।

पूरे देश में यह निश्चय करना चाहिए कि राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों में किन्हें सम्मिलित किया जाय और क्षेत्रीय स्तर की पुस्तकों में किन्हें स्थान मिलना चाहिए।

पश्चिम बंगाल के शिक्षामंत्री महोदय सरस्वती प्रतिमा को देखकर और सरस्वती वन्दना को सुनकर भड़क उठते हैं। वहाँ की पुस्तकों में सरस्वती को पहले ही खारिज किया जा चुका है, अब कहीं से पुस्तकों में मूषकधारी गणेशजी घुस गये। ऐसी सात लाख पुस्तकें छात्रों में वितरित की जा चुकीं। अब क्या हो, अगले सत्र से गणेशजी को भी पुस्तकों से विदा किया जायगा। गणेशजी धर्मनिरपेक्षता के लिए बहुत बड़ा खतरा हैं। क्या ही अच्छा हो वामपंथी सहयोगाधारित सरकार धर्म निरपेक्षता के संकट से सदा के लिए मुक्त करने के लिए देश को आदिम सभ्यता की ओर ले जाय। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

वस्तुस्थिति यह है कि आज शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से भटककर राजनीतिग्रस्त हो गई है। वोटपरक शिक्षा से बचने का प्रयास करें। पहले बच्चों को अपने जिले का भूगोल व इतिहास पढ़ाया जाता था। आज देश और प्रदेश का ज्ञान राजनीतिक आधार पर देना चाहते हैं, जबकि बच्चे अपने घर से ही अपरिचित हैं।

शिक्षा का स्वरूप निश्चित करने के लिए गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर सर्वेक्षण करें और तब शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करें। **—समय सार**

पृष्ठ 1 का शेष

इतिहास का सत्य बड़ा निर्मम होता है, उसे हमें स्वीकार करना चाहिए, उससे सबक लेना चाहिए। प्रत्येक वर्ग और समाज में इतनी सहुष्णिता का सृजन किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक समाज अपने अंतर्मन में झाँककर, ऐतिहासिक भूलों को सुधारे तभी इतिहास का लक्ष्य पूरा होगा, नहीं तो यह विवाद कभी समाप्त नहीं होगा और हम दुनिया को मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। संतुष्टि का नाम इतिहास नहीं है। क्यों न इतिहास की निर्ममता को स्वीकार करते हुए एक राष्ट्रीय इतिहास लिखा जाय जिसमें सभी की जय-पराजय सम्मिलित हो, उसे स्थितप्रज्ञ भाव से ग्रहण करते हुए सत्य को उजागर किया जाय। **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

यत्र-तत्र-सर्वत्र

मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने एन०सी०ई०आर०टी० (राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद) की प्रबन्ध समिति में मध्यप्रदेश के कवि तथा विद्वान चन्द्रकान्त देवताले, जे०एन०यू० के इतिहास विभाग की मृदुल मुकर्जी, दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग की अनीता रामपाल, केरल साहित्य परिषद के एम०पी० परमेश्वरन को मनोनीत किया है। परिषद के सभी प्रमुख निर्णयों के लिए प्रबन्ध समिति की स्वीकृति आवश्यक होती है।

सचल पुस्तकालय

नेशनल बुक ट्रस्ट बड़ी वैन में सचल पुस्तकालय द्वारा दूरस्थ गाँवों में जहाँ पुस्तकों की पहुँच नहीं है, पुस्तकें लेकर पहुँचते हैं। गाँव के स्कूलों में कहानी, कविता तथा जानकारी की पुस्तकें बच्चों को आकर्षित करती हैं, इससे उनमें पुस्तकें पढ़ने की रुचि जागृत होती है। ट्रस्ट इस समय नौ सचल गाड़ियों द्वारा देश के विभिन्न भागों में पुस्तकें लेकर पहुँच रही है। नवसाक्षर भी इन पुस्तकों में रुचि ले रहे हैं। देश को नव निर्माण के लिए अग्रसर करना है तो गाँव-गाँव में पुस्तकें पहुँचाइये, पुस्तकें उनमें कल्पना, विचार, संकल्प और आत्मविश्वास का सृजन करेंगी।

क्या राज्य सरकारें प्रत्येक कमिश्नरी में ऐसे ही सचल पुस्तकालय द्वारा गाँवों तक पहुँचकर जन-जन को जागृत करेंगी ?

डॉ० डोमन साहु 'समीर' को कर्ण पुरस्कार

20 अप्रैल 2003 को समय साहित्य सम्मेलन पुनसिया द्वारा आयोजित दसवें महाधिवेशन में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित संताली भाषा के जनक और हिन्दी-अंगिका के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० डोमन साहु 'समीर' 'कर्ण पुरस्कार' से सम्मानित किये गये। संस्था के अध्यक्ष डॉ० अमरेन्द्र और महामंत्री डॉ० अनिरुद्धप्रसाद विमल ने रेशमी चादर, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न देते हुए उनके साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व पर विशद चर्चा की।

इस महाधिवेशन में गद्य क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लेखन के लिये 'शहीद मंगलीलाल स्मृति पुरस्कार' डॉ० मधुसूदन झा को प्रदान किया गया।

बनारस कल और आज

पहले तो हर घर और गली-कूचे में साहित्य था और बहसें थीं। आज तो बाजार क्या नगर में ही नहीं है। आचार्य द्विवेदी के कारण काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तो केन्द्र था ही, नागरी प्रचारिणी सभा, बेढबजी के कारण डी०ए०वी० और मार्कण्डेय सिंह के कारण उदय प्रताप कालेज भी अपनी साहित्यिक गतिविधियों के कारण जाने जाते थे। त्रिलोचन साहित्य की हवा की तरह इस नगर का चक्कर काटते रहते थे। ये वे दिन थे जब बनारस साहित्य और संस्कृति की राजधानी कहा जाता था। तब नामवर सिंह, शिवप्रसाद सिंह, शम्भूनाथ सिंह, ठाकुरप्रसाद सिंह, केदारनाथ सिंह, विजयमोहन सिंह, रामदरश मिश्र और विष्णुचंद्र शर्मा उभरती हुई नयी प्रतिभाएँ थे। आलोचना, कविता, कहानी, गीत इन सारी विधाओं के आकर्षण का केन्द्र था बनारस। बाहर से सभी प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित रचनकार यहाँ के साहित्यकारों से मिलने-जुलने, इन्हें देखने और इनसे बात करने के लिए आया करते थे। वैचारिक बहसों पर केन्द्रित गोष्ठियाँ भी खूब होती थी।

सबसे पहले मुझे धूमिल याद आते हैं। इसलिए कि धूमिल के जाने के बाद मैं अकेला हो गया।

आज तो न कोई पढ़ी जाने वाली किताबों के बारे में बात करता है और न उन रचनात्मक प्रश्नों के बारे में जो हमें आन्दोलित करते हैं। इसी वजह से लोग साहित्यिक सूचनाएँ रखने को ही साहित्य-कर्म समझने लगे हैं। **—काशीनाथ सिंह**

विश्वविद्यालयों में हिन्दी की स्थिति

आज विश्वविद्यालयों में हिन्दी छात्रों की संख्या निरन्तर घटती जा रही है। स्थिति यह है कि दिल्ली में जहाँ अन्य विषयों में प्रवेश पाने के लिए 80 से 90 प्रतिशत अंक पाने पर भी सरलता से प्रवेश नहीं मिलता, वहीं हिन्दी-संस्कृत में 45 प्रतिशत अंक प्राप्तकर्ता को प्रवेश मिल जाता है। यह है आज हिन्दी की दशा।

वेबसाइट पर दुर्लभ पांडुलिपियाँ

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थालय में उपलब्ध लगभग सात हजार दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ नेशनल लाइब्रेरी की तर्ज पर वेबसाइट पर लोड की जा रही है। विश्वविद्यालय में आयुर्वेद, इतिहास, सामाजिक विज्ञान की दुर्लभ पाण्डुलिपियों का अध्ययन करने के लिए देश-विदेश से शोधरत छात्र आते हैं।

पद्मभूषण पं० विद्यानिवास मिश्र पर वृत्तचित्र

साहित्य अकादमी की पहल पर संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान पं० विद्यानिवास मिश्र पर वृत्तचित्र का निर्माण हो रहा हे। निर्देशक राकेश श्रीवास्तव के अनुसार 25 मिनट के इस वृत्तचित्र में मिश्रजी के जीवन और कृतित्व को दर्शाया जायगा। गोरखपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, दिल्ली, आगरा आदि स्थलों पर जाकर फिल्म की सूटिंग की जायगी।

अर्थकरी भाषा ज्ञान

भूमण्डलीकरण के इस युग में अपने देश की विभिन्न भाषाओं का ज्ञान हो या न हो किन्तु विभिन्न देशों के भाषा का ज्ञान अर्थकरी सिद्ध हो रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय के बी०ए० आनर्स में फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश और इटैलियन भाषा का शिक्षण हो रहा हे। इसके लिए 100 सीटें हैं। इसमें भी प्रवेश सरलता से नहीं मिलता। भाषा ज्ञान के साथ उस देश के साहित्य और इतिहास की जानकारी भी कराई जाती है। ऐसे भाषाविदों को बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ नियुक्त करती हैं, जिनका विश्व-व्यापार है।

सुभद्राकुमारी चौहान की जन्मशतवार्षिकी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के तत्त्वावधान में 9-10 जून 2004 को नैनीताल में 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी' की उद्घोषक कवियत्री सुभद्राकुमारी चौहान के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

स्वागत साहित्य अकादमी के सचिव के० सच्चिदानंद ने किया और उद्घाटन राज्यपाल श्री सुदर्शन अग्रवाल ने दिया। संगोष्ठी में सुभद्राकुमारी चौहान के काव्य, कथा साहित्य, चिन्तनपरक गद्य तथा भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में उनके योगदान पर चर्चा हुई। संगोष्ठी में सर्वश्री गिरिराज किशोर, कृष्णकुमार, आर०सी० पंत, केदारनाथ सिंह, विश्वनाथप्रसाद तिवारी, कृष्णदत्त पालीवाल, प्रयाग शुक्ल, मधुबाला नयाल, निर्मला जैन, विजयबहादुर सिंह, ममता कालिया, बटरोही, दूधनाथ सिंह, नीरजा टण्डन, प्रीति सागर, नंदकिशोर आचार्य, कमलाप्रसाद, आनन्दप्रकाश, अरुण कमल, उमा भट्ट, निर्मला ढैला, अजितकुमार, नासिरा शर्मा, भगवत रावत, मानवेन्द्र पाठक, दिवा भट्ट, आलोक राय प्रभृति साहित्यकारों ने भाग लिया।

साहित्य अकादमी का यह सराहनीय प्रयास है जो विभिन्न साहित्यकारों के सान्निध्य में सुभद्राजी को उनकी जन्मशतवार्षिकी पर स्मरण किया गया।

> याद आ रही है—सुधा की शादी के पश्चात् बाहर शामियाने में परिजन पुरजन एकत्र थे। बड़े बूढ़े लोग एक-एक कर उठते और अपने भाव व्यक्त करते, वर-वधू को आशीर्वाद देकर बैठ जाते, अन्त में सेठ गोविन्ददास ने कहा : अब मैं बहन सुभद्रा से कहूँगा कि वे बेटी और दामाद को आशीर्वाद दें।
>
> वे उठीं, बोलीं—"आशीर्वाद क्या दूँ। जिस दिन सुनूँगी देश के लिए मेरे बेटी और दामाद जेल में हैं या उससे भी अधिक कष्ट उठा रहे हैं, चाहे कितनी भी बूढ़ी हूँगी, मेरी छाती खुशी से फूल उठेगी।" **—डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त**

पंजाब विश्वकोश

पंजाब के मुख्यमंत्री श्री अमरिन्दर सिंह ने पंजाब के भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित पंजाब विश्वकोश का लोकार्पण किया। भाषा विभाग के निदेशक डॉ० रछपाल सिंह ने बताया कि 1991 में शुरू किया गया यह कार्य मई 2004 में पूर्ण हुआ। इस पुस्तक में पंजाब की पहले और आज की सीमाएँ दर्शाता नक्शा भी है। एक-एक हजार पृष्ठों के दो खण्डों में पंजाब का इतिहास, संस्कृति, भूगोल, साहित्य, धर्म, राजनीति, व्यक्ति पर 10,000 प्रविष्टियाँ हैं। ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध स्मारकों, धार्मिक स्थलों तथा व्यक्तियों के रंगीन चित्र भी हैं।

राज्यभाषा अनिवार्य

सुप्रीमकोर्ट ने अपने महत्त्वपूर्ण निर्णय में कहा है कि सरकार अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में मातृभाषा को अनिवार्य विषय बना सकती

है। यह निर्णय महाराष्ट्र के गुजराती स्कूल में मराठी को अनिवार्य विषय बनाये जाने के सरकार के फैसले के विरुद्ध दाखिल याचिका खारिज कर दी। निर्णय में कहा गया—मातृभाषा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करना कहीं से भी अल्पसंख्यक समुदाय के मौलिक अधिकार का हनन नहीं है।

'ठण्डी आग' लोकार्पित

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि, श्री रामसहाय खरे की सन् 1950 के मध्य रचित श्रेष्ठतम रचनाओं का संग्रह 'ठण्डी आग' का विमोचन प्रख्यात कवि एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी निदेशक श्री सोम ठाकुर ने बीना (मध्य प्रदेश) में 18 अप्रैल 2004 को किया।

कविवर श्री सोम ठाकुर ने खरे परिवार के सदस्यों एवं विशेषकर उनके सुपुत्र श्री गोविन्दसहाय खरे एवं श्रीमतजी गीता खरे के इस श्रेष्ठतम श्रद्धा श्राद्ध पर आर्शीवचन प्रस्तुत करते हुए कृति का लोकार्पण किया। आपने अपने मित्र कवि के दिवंगत हो जाने पर जहाँ खेद प्रकट किया वहीं पुस्तक में समाहित श्रेष्ठ रचनाओं से गुंफित कृति के प्रकाशन पर सन्तोष व्यक्त किया।

'समझणिए की मर' को साहित्यिक सम्मान

हरियाणा साहित्य अकादमी ने हरियाणवी उपन्यास 'समझणिए की मर' के लेखक डॉ० श्यामसखा 'श्याम' को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया है। पुरस्कारस्वरूप दस हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति-पत्र तथा अंगवस्त्र प्रदान किया जायगा। इतना ही नहीं डॉ० श्याम को हरियाणा रोडवेज की बसों पर आजीवन नि:शुल्क यात्रा करने की सुविधा रहेगी।

छत्तीसगढ़ में 97 निजी विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ की पूर्व सरकार ने मुक्तहस्त से 97 विश्वविद्यालयों को मान्यता दी जबकि इतने महाविद्यालय नहीं हैं। दो-दो कमरे में चलने वाले इन विश्वविद्यालयों की भारी भीड़ लगता है कि अब समाप्त हो जाएगी। राज्य सरकार ने इस सम्बन्ध में बने अधिनियम के प्रावधानों में संशोधन कर दिया है जिससे अब केवल वही संस्थाएँ रह जाएगी जो गम्भीरता से इस क्षेत्र में कार्य करने की इच्छुक होंगी। राज्य की नई सरकार ने इन विश्वविद्यालयों पर नियंत्रण के लिए अधिनियम में संशोधन कर नियामक आयोग का गठन किया है और दो महत्त्वपूर्ण शर्तें और जोड़ दी है। निजी विश्वविद्यालयों की आई बाढ़ के कारण देशभर में शिक्षा क्षेत्र में विशेष रूप से चर्चित हुए छत्तीसगढ़ में इन पर अंकुश लगाने का राज्य सरकार के कदम का असर होता दिखाई पड़ रहा है और 97 में से अभी तक केवल दो ने संशोधित अधिनियम के प्रावधानों को पूरा किया है तथा 10 ने इसके लिए तय तिथि 30 जून तक पूरा करने का आश्वासन दिया है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा आयोजित एकादश व्याख्यानमाला में प्रो० जगमोहन सिंह राजपूत

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान शिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०), नई दिल्ली के निदेशक प्रो० जगमोहन सिंह राजपूत ने 'शैक्षिक परिवर्तन के संदर्भ में सम्भावनाएँ' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैकाले की शिक्षा पद्धतिने हमें अपनी संस्कृति के साथ ही अपनी उपलब्धियों से भी विमुख कर दिया। मैकाले ने भारत में अंग्रेजों के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रचार-प्रसार किया, जिसने हमारी परम्पराओं व संस्कृति को गहरी चोट पहुँचायी है। अंग्रेजों के आने के पूर्व भारत में साक्षरता का प्रतिशत सर्वाधिक था। देश के प्रत्येक गाँव में पूरी ईमानदारी से स्कूल संचालित किये जाते थे। उस समय हर वर्ग के लोग स्कूल में जाते थे। भारतीय संस्कृति की आभा व उसमें छिपा ज्ञान विलक्षण है। यदि हमने अपनी संस्कृति से जीवन्त सम्बन्ध नहीं बना कर रखा तो बहुत जल्द वह नष्ट हो जाएगी और तब हमारे पास पछताने के सिवा कुछ भी नहीं रह जाएगा।

पृष्ठ 1 का शेष

चूके अवसर पइहै' की जो सुप्त (और प्रगट) धारणा भारतीय मानस में रही है, उसके राजनीतिक चरमोत्कर्ष का यदि एक युग आरम्भ हुआ है, तो उसका घंटा-घड़ियाल बजाकर स्वागत किया जाना चाहिए।

क्यों नहीं! अवसरवाद को अवसर क्यों नहीं दिया जाए। स्वयं को प्रतिष्ठित करने का एक मौका मौकापरस्तों को क्यों न मिले! अवसरवाद भी एक वाद है और उसका भी हक बैठता है। दलालों, चमचों, धोखेबाजों के समकक्ष खड़े वे भी अपने लिए सही वक्त की तलाश में रहे हैं। इस देश ने इतने वादों को वर्षों से वर्षों तक अवसर दिया है। अब अवसर आ गया है कि हम एक अवसर अवसरवाद को दें। उसकी जय-जयकार के क्षणों में वैसा ही तटस्थ मजा लें, जैसा हमने अन्य वादों के चरम क्षणों में लिया था।

—स्व० शरद जोशी

आपका पत्र

भारतीय वाङ्मय के आमुख के माध्यम से जड़ को जङ्गम बनाने के आपके प्रयास की सराहना। भाषायी वैश्वीकरण के क्रम में हिन्दी कोशों की जड़ता पर प्रकाश डालकर आने बड़ा स्तुत्य कार्य किया। अनुदानभोगी हिन्दी सेवी संस्थाओं के हाथों शब्दकोशों का उद्धार सम्भव नहीं। — **धर्मशील चतुर्वेदी,** वाराणसी

रिव्यू कल्चर

रिव्यू की रचना प्रक्रिया जटिल जोखिम भरी एक जालिम प्रक्रिया है, जो सौ फीसदी पारदर्शी है। इसमें बहुत से संघर्ष, बहुत-सी पीड़ाएँ और चुनौतियाँ होती हैं। जिस तरह अन्य दुनियाभर की समस्याओं पर हिन्दी में न ध्यान देने का चलन चल पड़ा है उसी तरह रिव्यूअर पर कोई ध्यान नहीं देता। जब सब इतना पारदर्शी हो तो कोई क्या तो ध्यान दे और क्या रिव्यू का रिव्यू करे।

कई दशक पहले स्वर्गीय देवीशंकर अवस्थी ने ऐसे ही रिव्यूज की एक किताब सम्पादित की थी, जिसका नाम 'विवेक के रंग' रखा था। कई लोग इस किताब को बड़ा महत्त्व दिया करते हैं। महत्त्वपूर्ण है भी क्योंकि उसमें रिव्यू की 'अंडर बैली' नजर नहीं आती। हिन्दी की रिव्यू कल्चर के 'पेट और पेड़ू' नहीं दिखाई देते वह छिपा हुआ है। अब दारू और मुर्गे का विवेक का रंग दिखता है। क्यों न एक ऐसी किताब बनाई जाए, जिसका नाम 'विवेक के रंग दारू-मुर्गे के संग हो' जिसमें आज के कुछ रिव्यूज का संग्रह हो और भूमिका इस लेखक की हो? **—सुधीश पचौरी**

लोक संवेदना से दूर होती कविता

रचनाकार व्यष्टि की पीड़ा में समष्टि पीड़ा का आभास करता है। उसकी संवेदना और कल्पनाशीलता इतनी तीव्र होती है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म तथ्य भी उससे ओझल नहीं हो पाते। आहत क्रौञ्च को देख वाल्मीकि सिहर उठे और जाग उठी उनकी लोक संवेदना। जायसी के 'पद्मावत' में नागमती के रुदन स्वर से विहंगम की संवेदना जागती है। सीताहरण काल में पक्षी सीता के विलाप पर द्रवीभूत होता है। विद्यापति-साहित्य में भी मानवीय संवेदनाओं का आरोपण पक्षियों के साथ किया गया है। जिससे समकालीन साहित्य अछूता होता जा रहा है और यही कारण है कि कविता लोक संवेदना से दूर होती जा रही है। कविता का तात्पर्य होता है कि वह लोक संवेदना पैदा करे। मानवीय संवेदना से जुड़ाव पैदा करे, भावों का सम्प्रेषण करे। क्योंकि सम्प्रेषणीयता ही कविता को और अधिक ऊर्जावान बनाती है। जड़ में भी चेतनता का आरोपण कवि अपनी इसी शक्ति द्वारा करता है और कविता साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक प्रभावशाली होकर पाठक/श्रोता (समाज) को छूती है। इस प्रकार कवि की लोक संवेदना लोक हितार्थ रूप लेती रहती है। ऐसी रचनाएँ कालजयी न हों तो भी समाज की समकालीन प्रवृत्तियों पर अधिक छाप छोड़ती हैं। परन्तु समकालीन साहित्य में रचनाएँ लोक संवेदना से अछूती, भावरहित होती जा रही हैं।

— **लक्ष्यलीन सुमन,** गाजीपुर

पुस्तक समीक्षा

हंस

जून 2004

लाई हयात आए

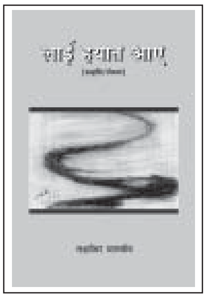

लक्ष्मीधर मालवीय

मूल्य : 280.00

ISBN : 81-7124-369-X

कोई व्यक्ति, यदि वह संवेदनशील लेखक भी हुआ तो परदेश में बस जाने के बाद अतीत की स्मृतियाँ—पीछे छूटे शहर के गली मोहल्ले, देश की मिट्टी, संगी-साथी किस तरह लगातार उसका पीछा करते हैं, इसका ज्वलंत उदाहरण है इलाहाबाद की ज़मीन से उखड़कर जापान के टोक्यो विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व प्रोफ़ेसर लक्ष्मीधर मालवीय जो लगभग 35-40 वर्षों से जापान में हैं। इनसे मिलने का अवसर तो मुझे कभी नहीं मिला, लेकिन इनकी पहली पुस्तक *रेतघड़ी* (उपन्यास) जो सम्भावना प्रकाशन, हापुड़ से 1980 के आस-पास छपी थी, ज़रूर मैंने पढ़ी। फिर उनकी दूसरी रचनात्मक कृति 'मक़चाँदनी' भी देखने को मिली। बीच में किसी पत्रिका में अपने आप से उनका दिलचस्प साक्षात्कार देखने को मिला था। अभी-अभी प्रकाशित उनकी नई पुस्तक *लाई हयात आए,* (प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी-221001, मूल्य : रु० 280/-) जिसकी प्रस्तुति और साज-सज्जा नयनाभिराम है और जिसे उन्होंने स्मृति/लेखा कहा है, पढ़ते हुए न केवल मैं मुग्ध हुआ बल्कि अभिभूत भी। पुस्तक के शीर्ष संस्मरण में अतीत के अपने जीवन की ओर लौटते हुए लक्ष्मीधर मालवीय लिखते हैं—''मेरा जन्म इलाहाबाद में हुआ और मैं इलाहाबाद से सीधे जापान नहीं, बल्कि जयपुर में साढ़े पाँच वर्ष विश्वविद्यालय में पढ़ाने के बाद आया... मैं हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ा हूँ। वहीं नौकरी पाने की ललक से एक वर्ष वहाँ अस्थायी पद पर रहते हुए बेगारी भी की, फिर झगड़कर जयपुर चला गया। इस पर मेरे मामा पं० ब्रजमोहन व्यास (*मेरा कच्चा चिट्ठा,* जैसी प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक एवं इलाहाबाद संग्रहालय के संस्थापक) ने मुझसे कहा था, बेटा, यूँ तो तुम्हारे खानदान में आधे पागल तो सब जन्म से ही होते हैं, महामनाजी से लेकर छोटे-से छोटा बच्चा तक? मगर तुम कुछ उनसे ज्यादा ही पागल हो?'' फिर मैं जयपुर जा रहा था तो उन्होंने कटाक्ष किया, ''तो तुम नौकरी करोगे?'' मेरे मामा दो-तीन बार जयपुर आए मगर मेरे यहाँ कभी नहीं आए। जब कभी मैं उनसे चलने का आग्रह करता बँधा-बँधाया उनका उत्तर होता, ''नौकर के यहाँ क्या जाऊँ!'' लक्ष्मीधर मालवीय जयपुर नौकरी करने निकले थे। 18 जुलाई 1961 को तब अपनी जेबी डायरी के 18 जुलाई वाले पन्ने पर उन्होंने लिखा था—Left Allahabad, FOR EVER उन्हें तब क्या मालूम था कि सन् 1966 की जुलाई में इलाहाबाद की जगह इण्डिया हो जाएगा? वे जापान चले गए। लिखते हैं, ''सन् 66 की जुलाई के दूसरे सप्ताह से विश्वविद्यालय में गर्मी की छुट्टी शुरू हुई तो अपने जापानी सहयोगियों के साथ मैं मध्य जापान को पहाड़ी क्षेत्र गिफ़ु ज़िले में गर्म सोतों के गाँव हितोएगाने में आयोजित होने वाली गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए निकला। जापान जाए मुझे तब दो माह ही हुए थे। ट्रेन से उतरकर बस पर सवार हो, चक्करदार पहाड़ी सड़क पर चढ़ते हुए दोनों ओर चीड़-देवदार के घने जंगल देख मैं अल्मोड़ा से आगे की सड़क देखने लगा! अरे, पुल के नीचे एक तेज पहाड़ी नदी दिखलाई दी, गरुड़ में जैसे कोसी! आगे की सड़क भुवाली की सड़क थी। बस-अड्डे पर बस पहुँची तो दाईं ओर लक्ष्मण सिंह की दुकान थी, यद्यपि इस दुकान में काम करने वाली जापानी लड़कियाँ थीं और यह चाय की दुकान थी भी नहीं।'' यह एकमात्र दृश्य-बिम्ब नहीं है, इस पुस्तक में ऐसे स्मृति बिम्बों की भरमार है जो बार-बार पीछे टूटे शहर, गली-मुहल्लों एवं जाने-पहचाने आत्मीय लोगों की ओर लौटती है। खासकर बाबूजी, फिराक साहब, ब्रजमोहन मामा, राय साहब, पारे की काँपती हुई बूँद : प्रभात, मणि तथा मणि मधुकर इत्यादि। चूँकि लक्ष्मीधर मालवीय बहुत अच्छे फोटोग्राफर भी हैं इसलिए भी इस पुस्तक की स्मृति/लेखा में फोटोजनिक चित्र ही नहीं, भाषा की प्रकृति ही नहीं, ऊँचाई भी है। पुस्तक की संवेदनशील अच्छी भाषा के दो उदाहरण ही काफी होंगे, ''उन्होंने वैसे ही झुककर उस स्मारक को नमस्कार किया जबकि पत्नी का शव मुर्दाघर में पड़ा हुआ था। जापानियों के बीच भी वह जापानी थे। 'चिड़िया की आखिरी उड़ान' से।'' दूसरा उदाहरण देश छोड़ने के प्रसंग में—''बदलों के छोटे-छोटे खण्डों के नीचे नीली धुंध में लिपटकर दूर जाती हुई धरती, मेरी! बस, एक ही बार, तब मेरी आँखें गीली हो आईं। 'लाई हयात आए' से। कहना न होगा कि यदि एक तरफ इस पुस्तक को पठनीय बनाने में मार्मिकता का हाथ है, तो दूसरी तरफ भाषा की सहज सरलता। मैं सिर्फ विश्वास दिला सकता हूँ कि पुस्तक पढ़कर पाठक ठगा महसूस नहीं करेगा। सचमुच बेहद दिलचस्प पुस्तक है यह। —**भारत भारद्वाज**

चरित्रहीन

आबिद सुरती

मूल्य : 180.00

ISBN : 81-7124-291-X

अपने जिस्म की नुमाइश करनेवाली एक लड़की की दास्तान....

साठ के दशक से कैबरे डान्स की ऐसी हवा चली थी कि दुनिया का शायद ही कोई देश उससे अछूता रहा होगा जैसे नवाबों के दौर में तवायफों का दबदबा था, वैसे ही उस दशक में कैबरे डान्सर जनमानस पर छायी थी। बम्बई के शानदार होटलों में डिनर के साथ कैबरे डान्स का कार्यक्रम होना गर्व की बात थी। बालीवुड की फिल्मों में हेलन का कैबरे अभिन्न अंग बन गया था।

'चरित्रहीन' उसी दशक की एक कैबरे-गर्ल की कहानी है, जो अपना जीवन नये सिरे से शुरू करना चाहती है। वह तंग आ चुकी है अपने ही जिस्म की नुमाइश से। अब उसे तीन दीवारों का खुला मंच नहीं, चहारदीवारी में बन्द गृहस्थी चाहिए। उसे हजारों पुरुषों की प्रशंसा नहीं, एक मर्द का सच्चा प्यार चाहिए।

उसकी इच्छा फलीभूत हुई, लेकिन उसके सपने चकनाचूर हो गये। जीवन घुटन और सीलन भरा तहखाना बन गया और साँस लेने के लिए उसमें कोई सुराख भी नहीं था। वह क्या करती?

हादसों के शहर में

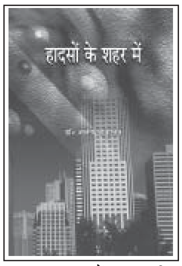

डॉ० अर्चना श्रीवास्तव

मूल्य : 40.00

ग़ज़ल पर लिखी लेखिका की पहली पुस्तक है जिसमें लगभग बीस वर्षों के दौरान लिखी चुनिन्दा ग़ज़लें सम्मिलित हैं। हिन्दी ग़ज़ल उर्दू ग़ज़ल की तरह बहर में बँधी, कड़े अनुशासन में बँधी नहीं है। ग़ज़ल प्रणयगीत भी नहीं है। इनमें विविध इन्द्रधनुषी रंग मिलते हैं। क़तरा-क़तरा विष पीती अन्याय और अत्याचार के खिलाफ़ आक्रोश व्यक्त करती है और फिर अपनी ही आश्वस्ति के प्रति उत्तरदायी होती ज़िन्दगी की धड़कन इन ग़ज़लों में मिलेगी। रिश्तों की कड़ुवाहट से भरी ज़िन्दगी यह कहने को विवश होती है कि—

चुना होता अगर छप्पर तो फटता ही ज़रूर
लिण्टरों की छत तले न बैठ मलते हाथ हम।
हादसों के शहर में मेरा ठिकाना है
संघर्ष की गली में मेरा आना जाना है।

बौद्ध तथा जैन धर्म

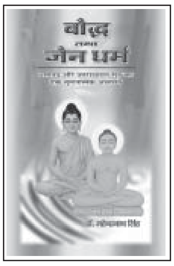

डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह

मूल्य : 180.00

ISBN : 81-7124-382-7

बौद्ध तथा जैन धर्म श्रमण संस्कृति की धाराएँ हैं। जो एक साथ संयुक्त रूप से देश में प्रवाहित हुई। तथागत बुद्ध और तीर्थंकर महावीर समकालीन थे। दोनों का प्रचार स्थल प्राय: पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार रहा। दोनों मानवतावादी थे। बौद्ध धर्म का प्रभाव समस्त दक्षिण पूर्व एशिया पर पड़ा। बौद्ध धर्म का लोकप्रिय ग्रन्थ 'धम्मपद' तथा जैन धर्म का प्रमुख ग्रन्थ 'उत्तराध्ययन' है। दोनों धर्मों में यद्यपि समानताएँ होते हुए भी अनेक विविधताएँ हैं। इस ग्रन्थ में दोनों धर्मों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के आधार पर विस्तृत तथा

समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध तथा जैन धर्म के उपर्युक्त प्रमुख ग्रन्थों को दृष्टिगत रखते हुए शरण–गमन, अर्हत् तत्त्व, कर्म एवं निर्वाण, आचार–मीमांसा, मनोवैज्ञानिक धारणाएँ, यथाचिन्त, अप्रमाद, कषाय तथा तृष्णा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, आशा है बौद्ध तथा जैन धर्म के जिज्ञासु पाठक प्रस्तुत ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे।

भारत के ओलम्पियन पहलवान

गोवर्द्धनदास मेहरोत्रा

मूल्य : 300.00

ISBN : 81-7124-375-4

गोवर्द्धनदास मेहरोत्रा ने अथक प्रयास से सामग्री जुटाकर 'भारत के ओलम्पियन पहलवान' पुस्तक लिखी है जिसमें 55 ओलम्पियन पहलवानों की जीवनी व उपलब्धियों को शामिल किया गया है। गोवर्द्धनदास मेहरोत्रा ने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स (पटियाला) से सन् 1962–63 में कुश्ती प्रशिक्षण की ट्रेनिंग ईरान के अमीर हमीदी से प्राप्त की। वे भारतीय कुश्ती टीम के प्रशिक्षक होकर 1967 में विश्व कुश्ती चैम्पियनशिप, तेहरान (ईरान) भी जा चुके हैं। लगातार बीसों साल तक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय रेफरी परीक्षा ईरान में पास की। राष्ट्रीय जूडो संघ के संस्थापक सदस्य व प्रथम सहायक मंत्री भी रहे। यह पुस्तक देकर श्री मेहरोत्रा ने आज के युवकों को प्रेरित किया है कि वे शरीर को मजबूत बनाएँ। गोवर्द्धनदास मेहरोत्रा की यह पुस्तक युवा वर्ग के लिए जहाँ प्रेरणादायक सटीक जानकारी दी है। प्रकाशक और लेखक ने यह पृष्ठभूमि तैयार की है कि खेलों को भी अनिवार्य विषय के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। इससे चरित्र विकास और तेजी से होगा। खेल अनुशासन भी सिखाता है।

—**अत्रि भारद्वाज,** 'गांडीव' वाराणसी

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पेपर बैक : 120.00 सजिल्द : 180.00

ISBN : 81-7124-380-0

विषय–क्रम

1. हिन्दी–गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ, 2. हिन्दी–गद्य की जातीय प्रकृति, 3. हिन्दी नव–जागरण के केन्द्र बिन्दु 'भारतेन्दु', 4. भारतेन्दु की भाषा–चेतना, 5. आधुनिक हिन्दी–गद्य पर गाँधी का प्रभाव, 6. प्रेमचंद का गद्य : स्वरूप और प्रकृति, 7. मैथिलीशरण गुप्त का आलोचनात्मक गद्य, 8. हिन्दी भाषा और साहित्य को राहुलजी की देन, 9. राहुल सांकृत्यायन : एक विकासमान व्यक्तित्व, 10. सियारामशरण गुप्त का गद्य, 11. महादेवी का गद्य, 12. शमशेर का गद्य, 13. उपन्यास का ढाँचा : 'जादुई यथार्थवाद' से बढ़कर 'यथार्थ का जादू', 14. प्रेमचंद और भारतीय समाज, 15. प्रेमचंद और भारतीय उपन्यास, 16. पंच परमेश्वर : भावात्मक मूल्यों की चरितार्थता, 17. बूढ़ी काकी : भूख के विरुद्ध रचनात्मक युद्ध, 18. ईदगाह : बालमन का उजास, 19. कफ़न : भूख का मनोविज्ञान, 20. प्रेमचंद का सौन्दर्य–बोध, 21. यशपाल के बौद्ध धर्म प्रभावित उपन्यासों में जीवन–मूल्य, 22. हिन्दी–गद्य की विद्रोह–मुद्रा : शेखर : एक जीवनी, 23. हिन्दी–उपन्यास : आंचलिकता बनाम लोक–चेतना, 24. संस्कृति के व्याख्याता : नागरजी, 25. आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य में नारी चेतना, 26. नये कवियों का आलोचनात्मक गद्य।

बज उठी पायलिया

तमिल महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' महाकाव्य का औपन्यासिक रूपान्तर

रूपान्तरकार

आर० वीलिनाथन्

मूल्य : 50.00

ISBN : 81-7124-146-8

तमिल देश की सांस्कृतिक महाकाव्य पर आधारित इस उपन्यास में तत्कालीन तमिल समाज का सजीव चित्र प्रस्तुत करने के साथ–साथ समाज में प्रचलित नृत्यों, व्यवसायों आदि का परिचय भी दिया है। नृत्य एवं संगीत की चर्चा करते समय रंगमंच और राग–रागिनियों का सूक्ष्म विवेचन किया है।

प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ

डॉ० नीहारिका

पृष्ठ : 316 मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-389-4

यह पुस्तक अपने नाम के अनुरूप इतिहास के तीन आधार स्तम्भों को अपने कलेवर में समेटे है। इतिहास की पुनर्रचना एवं लेखन में पुरातत्त्व के साथ ही अभिलेखों और मुद्राओं का महत्त्व सर्वविदित है। इन तीनों विधाओं का समग्र रूप इस पुस्तक में सम्मिलित है। पुरातत्त्व का योगदान विश्व परिदृश्य पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और भारत में भी इसका महत्त्व असंदिग्ध है। अभिलेखों और सिक्कों का महत्त्व इस सन्दर्भ में अकथनीय है। महान सम्राट अशोक के विचारों, कार्यों और उसकी महान उपलब्धियों पर अभिलेखों द्वारा जो प्रकाश पड़ता है, वह अन्य किसी भी साधन द्वारा सम्भव नहीं है। आहत एवं ढलुआं सिक्कों से प्राप्त अनेकानेक राजाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन सिक्के ही हैं। किन्तु यह इतिहास के विद्यार्थियों का दुर्भाग्य ही है कि इन विषयों पर हिन्दी भाषा में स्तरीय ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। यह उनकी अध्ययन एवं जिज्ञासा–पिपासा की तुष्टि के लिए विकट बाधा है। पुरातत्त्व सम्बन्धी अधिकांश ग्रन्थ आंग्ल भाषा में होने के साथ ही विभिन्न उत्खनित स्थलों की रपट के रूप में प्राप्त होते हैं। स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थी के लिए एक–एक उत्खनित स्थल की रपट पढ़ पाना एवं उसको आत्मसात कर पाना प्राय: सम्भव नहीं हो पाता। अभिलेखों और सिक्कों पर भी पुस्तकें बहुत सीमित हैं। पुरातत्त्व, अभिलेख एवं सिक्के ये तीनों एक साथ समग्र रूप से एक ही पुस्तक में नहीं सुलभ हो पाते हैं। लेखिका डॉ० नीहारिका ने इस अभाव की पूर्ति के लिए अत्यन्त श्रम व सावधानीपूर्वक इस पुस्तक की रचना की है। यह पुस्तक लेखिका के गहन अध्ययन, अध्यवसाय, सूझ–बूझ, लेखन–क्षमता का परिचायक है। पूरे विषय को बोधगम्य बनाने के लिए छायाचित्रों व रेखाचित्रों का भी प्रतुल समायोजन किया गया है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों के साथ ही सुधिजनों के लिए भी उपयोगी होगी और सामान्यजनों का ज्ञानवर्धन करेगी।

वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप

डॉ० युगेश्वर

पृष्ठ : 168 मूल्य : 90.00

आचार्य वल्लभ शुद्धाद्वैतदर्शन के महान् दार्शनिक हैं। इनके सम्प्रदाय में आठ श्रेष्ठ भक्त हो गए हैं। व्रज साहित्य के विकास में इन भक्तों का महत्त्वपूर्ण योग है। ये समस्त व्रजभाषा साहित्य के प्रमुख केन्द्र हैं। सूरदास, नंददास, परमानंददास इस सम्प्रदाय में हैं। इन्हें पुष्टिमार्गी भी कहा जाता है। इनमें भागवत का गम्भीर प्रस्ताव है। सभी रचनाओं का मूल भागवत है।

अत: अष्टछाप को जानना, समझना, पढ़ना व्रजकाव्य, भक्ति साहित्य, भागवत एवं भारत की सांस्कृतिक समृद्धि और परम्परा का समझना है।

युगेश्वर का 'वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप' अत्यन्त संक्षेप किन्तु पूर्णरूप से वल्लभाचार्य के दार्शनिक विचारों एवं भक्ति कविता को समझाता है। इस पुस्तक में वल्लभ सम्प्रदाय और अष्टछाप के कवियों के बारे में शायद ही कुछ छूटा हो।

अष्टछाप के कवियों को ठीक–ठीक जानने समझने के लिए सभी कवियों की प्रमुख रचनाओं के संग्रह भी हैं।

...पर साथ साथ चल रही याद

विष्णुकान्त शास्त्री

प्रकाशक : लोकभारती, इलाहाबाद

मूल्य : 150.00

साहित्यिक सौष्ठव की सुरभि से सिक्त संस्मरण

'...पर साथ–साथ चल रही याद' विष्णुकान्त शास्त्री के आत्मीयता से परिपूर्ण संस्मरण हैं। शास्त्रीजी ने पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर इलाहाबाद संग्रहालय में कहा था—"प्रभावित होना व प्रभावित करना जीवन्त मनुष्य का गुण है। हर व्यक्ति को अपने बड़ों से कुछ न कुछ सीखने का अवसर मिलता है, अत: इस अवसर को नहीं गँवाना चाहिए। विनम्र भाव से सीखने का प्रयास करना जरूरी है। इन संस्मरणों में उन्हीं को याद किया है जिनसे प्रभावित हुआ। जिन

साहित्यकारों ने विश्वास की कीमत चुकायी है, उन्हें याद किया गया है। हर रचनाकार सत्यनिष्ठा व पारदर्शिता जैसे मूल्यों की कसौटी पर ही निखरता है और वह अपने पाठकों समेत इष्ट मित्रों को प्रभावित कर सकने में समर्थ बनता है। मैंने भी अपनी पुस्तक में इन्हीं मूल्यों को बरकरार रखने का प्रयास किया है।''

बच्चन, नागार्जुन, जगदीश गुप्त, अमृत राय, रामविलास शर्मा, डॉ० नगेन्द्र, रामस्वरूप चतुर्वेदी जैसे मूर्धन्य साहित्यकारों को श्रद्धा, भावुकता और आत्मीयता से स्मरण किया गया है। समय और परिवेश से सम्पन्न इन संस्मरणों में व्यक्ति ही नहीं, इतिहास भी बोलता है।

आठवाँ संस्मरण 'तू मेरी बुलबुल : मेरी बड़ी नानी माँ' पारिवारिक संस्मरण है जिसमें शास्त्रीजी की अपनी कहानी है। अन्तिम संस्मरण 'सूरीनाम', सूरीनाम यात्रा में जिस भारतीयता की सुगन्ध अनुभव की उसकी मर्मस्पर्शी कहानी है।

ऐसा संवेदनशील साहित्यकार कितना सफल राज्यपाल है, विवादों से दूर अपनी साहित्यिक सुरभि सुरक्षित रखते हुए।

शास्त्रीजी की यह कृति उनके साहित्यिक जीवन और कृतित्व को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करती है। अपनी पूर्व संस्मरण कृति 'सुधियाँ उस चन्दन के वन की' में लिखा था ''जो बीत कर भी नहीं बतता, उसकी स्मृति मन में बार-बार कौंधती है। वह न केवल वर्तमान में जीवित रहता है बल्कि भविष्य की सर्जना में अपना अंशदान करता है।'' ऐसे सृजनशील व्यक्तित्व के संस्मरण ऐसे हैं जो भुलाए नहीं भूलते।

मीनाकुमारी
दर्द की खुली किताब

लेखक : **नरेन्द्र राजगुरु**

प्रकाशक : हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली

मूल्य : 200.00

सुनहले परदे की अविस्मरणीय नायिका 'साहब बीबी गुलाम' की मीनाकुमारी की कहानी उसके फिल्मों से कहीं अधिक दर्द भरी है। उस दर्द को भुलाने के लिए 'साहब बीबी गुलाम' की बीवी ने मुँह को जो गिलास लगाया 31 मार्च 1972 को गुडफ्राइडे के दिन उनके साथ ही चला गया। कलाप्रेमियों के लिए वह अद्वितीय अभिनेत्री थीं, दर्द को, व्यथा को अन्तर्मन से साकार करती थीं। उसकी शायरी में भी वही दर्द था जो उनके अभिनय में।

उनके एक-एक संवाद लगता है उनकी जिन्दगी के दर्द की कहानी कहते हैं। 'पाकीजा' में 'इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा मेरा' फिल्म जगत की उसके साथ हुई बेवफाई के स्वर हैं। कमाल अमरोही से शादी की मतभेद हुआ छोड़ा, लेकिन शुरू की गई 'पाकीजा' फिल्म खुद पहल कर पूरी की। उस वक्त मीनाकुमारी ने कहा था—जिन्दगी का शायद यह आखिरी पड़ाव है मेरा। सब हिसाब चुकता करके ही खुदा के पास जाना चाहती हूँ—

हर नये जख़्म पे अब रूह बिलख उठती है
होंठ गर हँस भी पड़े तो आँख छलक उठती है
जिन्दगी एक बिखरता हुआ दर्दान्त है
ऐसा लगता है कि अब खत्म सा अफसाना है।

फिल्म के विभिन्न पात्रों में जीने वाली मीनाकुमारी की यह दर्दभरी दास्तां है जो इस खुली किताब में महफूज़ है।

शिक्षा और शिक्षकों की रचनाधर्मिता
डॉ० सुमन जैन

प्रकाशक : आचार्यकुल, वाराणसी-221 010

मूल्य : 75.00

शिक्षा और शिक्षक दोनों रचनाधर्मी होंगे तभी शिक्षा अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकेगा और देश सृजनशील होगा। डॉ० सुमन जैन का कथन है—''शिक्षकों की रचनाधर्मिता के साथ ही साथ शिक्षा की रचनाधर्मिता''। यदि शिक्षक रचनाधर्मी हैं तभी तो उनकी शिक्षा में रचनात्मकता होगी। इसी को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न शिक्षाविदों, विचारकों और समाजसेवियों के कथन को उद्धृत करते हुए लेखिका के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के सभी आयामों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। गाँधी, विनोबा, मार्क्स, अरविन्द तथा देश-विदेश के अनेक शिक्षा दार्शनिकों के विचारों की सार्थकता के आलोक में शिक्षा के समाजोन्मुखी तथा विकासशील स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। जीवन का कोई पक्ष छूटा नहीं जिसके सन्दर्भ में शिक्षा की सार्थकता पर विचार न किया गया हो।

यह पुस्तक प्रत्येक शिक्षक को तो पढ़नी ही चाहिए, अभिभावकों को भी इस पुस्तक से बोध होगा कि समाज के बदलते परिवेश में बच्चों के लिए किस प्रकार की शिक्षा अपेक्षित है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 5 **जुलाई 2004** **अंक : 7**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 40.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

RNI No. UPHIN/2000/10104

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082